B. A. Third Year

First paper

Geographical Thought

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of geography

Harishchandra P. G. College Varanasi

बर्नहार्ड वारेनियस (Bernhard Varenius)
(1622-1650)

वारेनियस को वर्तमान भूगोल के संस्थापकों में सर्वप्रमुख माना जाता है। वह जर्मनी मे हैम्बर्ग के निकट एल्ब नदी पर स्थित हितजेकर (1622) में पैदा हुआ था। 18 वर्ष की अल्पायु मे उसने हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र, गणित तथा भौतिकी की शिक्षा प्राप्त की। 1647 में वह एमस्टरडम (नीदरलैण्ड) चला गया। वहाँ शिक्षक का कार्य किया यहीं से उसकी रुचि भूगोल में हो गयी। उसके दो ग्रन्थ 1649 एवं 1650 में प्रकाशित हुए।

(i) Regional Description of Japan and Siam (1649) (Description regni Laponiae et Siam) (5 खण्ड)

(ii) Geographia Generalis (1650) - उसका बहुचर्चित ग्रन्थ, सामान्य भूगोल 1650 में एमस्टरडम में प्रकाशित हुआ जिसमें उसने पहली बार ब्रह्माण्ड के विषय में नयी संकल्पना प्रस्तुत की। तथा भूगोल को क्रमबद्ध विषय बनाने का साहसिक प्रयास किया।

वह भूगोल को मिश्र गणित (Mixed Mathmetics) की एक शाखा मानता था। वह उन लोगों का कटु आलोचक था जो भूगोल को केवल देशों, स्थानों, नदियों, पहाड़ो आदि का वर्णन मात्र ही मानते थे। वह पहला भूगोल वेत्ता था जिसने भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल में अन्तर स्पष्ट करने का प्रयास किया।

⇒ वारेनियस प्रथम विद्वान था जिसने क्रमबद्ध एवं प्रादेशिक भूगोल की द्वैधता की आधारशिला रखी। उसने अपने विख्यात ग्रन्थ Geographia Generlis को दो भागों में बाँटा-

(i) सामान्य भूगोल (General Geography) (गणितीय एवं ब्रह्माण्डीय पहलू)

(ii) विशेष भूगोल (special Geography) (भौतिक एवं मानवीय पहलू)

⇒ वह प्रथम विद्वान था जिसने यह विचार प्रस्तुत किया कि अधिकतम तापमान विषुवत रेखा पर नहीं बल्कि अयन रेखाओं के निकट उष्ण मरुस्थलों में पाया जाता है।

⇒ वारेनियस के अनुसार सामान्य भूगोल ही क्रमबद्ध भूगोल है, उसने यह भी स्पष्ट किया सामान्य भूगोल, प्रादेशिक भूगोल पर तथा प्रादेशिक भूगोल, सामान्य भूगोल पर निर्भर करता है। वारेनियस ने भूगोल को तीन वर्गों में विभाजित किया -

(I) निरपेक्ष अथवा सार्वभौम भाग (Absolute Part) - इसे भौमिक भाग (Terrestrial) का नाम दिया गया, इसमें सम्पूर्ण पृथ्वी इसकी आकृति तथा आकार आदि का वर्णन है।

(II) सापेक्षिक भाग (Relative Part) - इसे ग्रहीय भाग (Planetary Part) कहा गया था। इसमें पृथ्वी से अन्य ग्रहों के सम्बन्ध का वर्णन है। इसमें पृथ्वी की जलवायु पर सूर्य के प्रभाव को समझाया गया।

(III) तुलनात्मक भाग (Comparative part) इसमें भूतल पर विभिन्न स्थानों एवं क्षेत्रों की स्थिति का वर्णन किया गया तथा नौसंचालन (Navigation) के सिद्धान्तों को समझाया गया।

वारेनियस अपने ग्रन्थ के दूसरे खण्ड अर्थात विशिष्ट भूगोल का केवल आरम्भिक भाग ही लिख पाया था क्योंकि 28 वर्ष की अल्पावस्था में ही उसकी मृत्यु हो गयी थी। इस खण्ड की रूपरेखा के अनुसार इस खण्ड को भी तीन उपविभागों में बाँटा गया।

(a) खगोलीय गुण धर्म (Celestial Properties)- इसमें सूर्य, चन्द्रमा, विभिन्न ग्रहों की स्थिति, वायुमण्डल एवं जलवायु को शामिल किया गया
(b) पार्थिव गुण धर्म (Terrestrial Properties) इसमें विभिन्न देशों के उच्चावच, पर्वतों, सागरों, नदियों, वनों, मरुस्थलों और पशुजीवन का वर्णन सम्मिलित है।
(c) मानव गुण धर्म (Human Properties) - इसमें विभिन्न देशों के लोगों, उनके परिवहन, व्यापार तथा सरकारों के वर्णन को सम्मिलित किया गया था।

वारेनियस के सामान्य भूगोल से प्रभावित होकर न्यूटन ने इसका अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करवाया। सामान्य और विशेष भूगोल वारेनियस के भौगोलिक चिन्तन का मुख्य अंग थे।

फिलीप क्लूवेरियस (Cluverius- 1580-1622)- यह 17 वीं शताब्दी का महान जर्मन भूगोल वेत्ता था। उसने 'विश्व भूगोल की प्रस्तावना "An Introduction to Universal Geography)" नामक ग्रन्थ छः खण्डों में लिखा। प्रथम खण्ड 1616 में तथा शेष खण्ड 1624 में मृत्योपरान्त प्रकाशित हुए। काफी समय तक इसे प्रादेशिक भूगोल की आदर्श पुस्तक माना गया। प्रथम खण्ड में पृथ्वी का सामान्य विवरण एवं गणित भूगोल की व्याख्या की, उसमे वृहद् वृत्त, अक्षांश, देशान्तर एवं भूमध्य रेखा तथा ग्लोब का 360° में विभाजन को भी समझाया। शेष पाँच खण्डों में यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, पश्चिमी एशिया व अन्य प्रदेशों का वर्णन किया।